



वन : हमारी अमूल्य संपदा (निबंध)



अध्ययन से पूर्व

ये आप क्या कर रहे हैं दादा जी?

बेटा! तुम्हारे और तुम्हारी आने वाली पीढ़ियों के लिए मीठे फलों का इंतजाम कर रहा हूँ।



निबंध का मूल तत्व

बच्चों को वन संरक्षण का महत्व समझाना।



मानव जीवन के लिए वनों का बहुत महत्व है। जीवन की शुरुआत से लेकर अंत तक मानव जीवन पर्यावरण पर ही निर्भर रहता है। ऐसे में यह कहना गलत नहीं होगा कि पर्यावरण के विभिन्न अंग जैसे- वायु, जल, मिट्टी, पेड़-पौधे मानव जीवन के लिए अति आवश्यक हैं। पर्यावरण के विभिन्न घटकों में वनों का अत्यधिक महत्व है। यदि पर्यावरण का संरक्षण न हुआ तो स्वस्थ जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकेगी। इसका प्रमाण हमें हमारे प्राचीन ऋषि-मुनियों के आश्रमों में देखने को मिलता था, जो वनों में आश्रम बनाकर न सिर्फ तपस्या करते थे अपितु गुरुकुल द्वारा शिष्यों को भी प्रकृति से जोड़ते हुए मनुष्य का प्रकृति से संबंध स्थापित करते थे।

प्रकृति ने धरती को वृक्ष तथा वनस्पतियों के रूप में अनेक अमूल्य संपदा प्रदान की है जिन्हें वन संपदा कहा जाता है। वृक्ष मानव जीवन के लिए सबसे उपयोगी तत्व माने जाते हैं। क्योंकि पृथ्वी पर सजीवों को जीवित रहने के लिए ऑक्सीजन की आवश्यकता पड़ती है और ऑक्सीजन का एकमात्र स्रोत वृक्षों को ही माना जाता है।

प्राचीन भारतीय ग्रंथों में वनों की महिमा के अनेक उल्लेख उपलब्ध हैं। अथर्ववेद में वनों को समस्त सुखों का स्रोत कहा गया है। गीता में श्रीकृष्ण ने वृक्ष को ईश्वर की विभूति कहकर उसका महत्व स्पष्ट किया है। अग्निपुराण में वृक्षों को काटने का निषेध किया गया है, क्योंकि वे परिवार की सुख-समृद्धि के आधार हैं। मत्स्यपुराण में एक वृक्ष को दस पुत्रों के बराबर बताया गया है। अतएव वृक्षों की रक्षा और उनका संवर्धन मानव जीवन की सुख-सुविधाओं के लिए

परमावश्यक है। वृक्षों को अनावश्यक रूप से काटना अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारना है।

वृक्षों के महत्व के संबंध में एक वृद्ध किसान तथा राजा के बीच वार्तालाप का प्रसंग बहुत ही अर्थपूर्ण है। वृद्ध किसान सड़क के किनारे आम का एक पौधा लगा रहा था। वह इतना बूढ़ा और क्षीणकाय था कि उसके हाथ-पैर काँप रहे थे। संयोगवश मार्ग से राजा का रथ निकला। उसने वृद्ध को पौधा लगाते देखा तो उसके पास पहुँचकर पूछा- “बाबा जी! आप बहुत वृद्ध हो चुके हैं। क्या आप इस वृक्ष के फल खा सकेंगे जो इतनी तन्मयता से यह पौधा लगा रहे हैं?”



वृद्ध ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया- “महाराज, जिस पौधे को मेरे बाप-दादा ने लगाया था, उसके फल मैं खाता रहा हूँ। इसी प्रकार जो पौधे मैं लगा रहा हूँ, उनके फल मेरे बेटे-बेटियाँ और पोते-पोतियाँ खाएँगे। पेड़-पौधे तो समाज की धरोहर हैं, ये हमारी अमूल्य संपदा हैं।” राजा ने प्रसन्न होकर वृद्ध को पुरस्कार दिया और सम्मानित किया।

वृद्ध किसान का कथन पूर्णतः सत्य था। वन तथा पेड़-पौधे संपूर्ण मानव जाति के लिए धरोहर हैं। हजारों वर्षों से मनुष्यों की एक पीढ़ी इन्हें अगली पीढ़ी को सौंपती आई है। अतः वर्तमान पीढ़ी का यह कर्तव्य है कि वह आने वाली पीढ़ियों के लिए अधिकाधिक संख्या में वृक्षारोपण करे।

आधुनिक काल में पेड़-पौधों को नए संदर्भ में समझने का दृष्टिकोण विकसित हुआ है। अब पेड़-पौधों को ‘हरा सोना’ कहा जाता है। दोनों में यही अंतर है कि सोना (धातु) खान के भीतर मिलता है, जबकि हरा सोना (वृक्ष) खुली भूमि पर सुलभ है। धरती पर इनसानों के अतिरिक्त अन्य सजीव प्रजातियाँ भी मौजूद हैं और हर किसी को जीने के लिए किसी-न-किसी माध्यम की आवश्यकता पड़ती ही है। ऐसे में वन मुख्य भूमिका निभाते हैं।

वृक्षों के लाभ भी अनेक हैं। ये वर्षा में सहायक हैं। वृक्षों की घूमती हुई शाखाएँ श्याम मेघमालाओं को जलवृष्टि का निमंत्रण देती हैं। वृक्षों की जड़ें पानी के तेज़ बहाव को रोकती हैं, जिससे भूमि संरक्षण में सहायता मिलती है। तेज़ बहाव रुकने से भूमि की उर्वरा शक्ति सुरक्षित रहती है। वृक्षों से ही हमें ऑक्सीजन मिलती है और हमारे द्वारा छोड़ी गई कार्बनडाइऑक्साइड को वे अवशोषित कर लेते हैं।

वृक्ष कई प्रकार से हमारे काम आते हैं। जड़ से लेकर तना, शाखाएँ, औषधियाँ, लकड़ी, छाल, फल, फूल, बीज आदि सभी हमारे जीवन के लिए उपयोगी हैं। उनकी लकड़ी घरेलू उपयोग के सामान बनाने और ईंधन के काम आती है। वनों से ही पशु-पक्षियों को आश्रय तथा भोजन प्राप्त होता है।

वनों से और भी कई लाभ हैं। पेड़-पौधे वातावरण की अशुद्ध एवं हानिकारक वायु को स्वयं पचाकर हमें

शुद्ध वायु प्रदान करते हैं। ये भूमि को अधिक तप्त होने से रोकते हैं। वनों की अधिकता के कारण ही प्राकृतिक आपदाओं में कमी आती है, क्योंकि वैज्ञानिकों का अनुमान है कि यदि भू-तल पर वृक्ष न होते तो पृथ्वी का तापमान बढ़कर इतना अधिक हो जाता कि ध्रुवीय प्रदेशों पर जमी बर्फ पिघल जाती। उस बर्फ के पिघलने से पृथ्वी पर जल की मात्रा इतनी अधिक हो जाती कि पृथ्वी उसमें समा जाती। तब न पृथ्वी पर मानव रह पाता, न पशु-पक्षी और न वनस्पति-जगत ही।



वन उपज का उपयोग गृह-निर्माण, मेज-कुर्सी, दरवाज़े, खिड़कियाँ, बैलगाड़ी, कृषि-उपकरण, खिलौने, खेल की सामग्री, वाद्य-यंत्र, नौकाएँ, खंभे, पुल, कागज़, माचिस आदि बनाने में किया जाता है।



आज शहरीकरण और विकास के नाम पर वनों को काट लकड़ियों की कालाबाज़ारी बेझिझक हो रही है। जनसंख्या विस्फोट के फलस्वरूप अधिक खेती के लिए वनों की कटाई, नदी घाटी परियोजनाओं को पूरा करने तथा रेलमार्गों एवं सड़कों का विस्तार करने के लिए भी वनों का सफाया किया जा रहा है।

अपनी वर्तमान परिस्थितियों में ही वनों के क्षेत्र को बढ़ाने तथा **हरीतिमा** संवर्धन के लिए हमें प्रयास करने होंगे। जहाँ नहरों और सड़कों का निर्माण किया गया, उनके किनारे वृक्ष लगाए जा सकते हैं। सड़कों के किनारे वृक्ष होने से जहाँ वायुमंडल का संतुलन बनाए रखने में सहायता मिलेगी, वहीं यात्रियों को शीतल छाया भी सुलभ होगी। आम के आम गुठलियों के दाम।

भारत सरकार द्वारा अपनाई गई नीति के अनुसार देश के 33% भू-भाग पर वन होने आवश्यक हैं। विगत दशकों में वनों की अँधाधुंध कटाई होने से वनों का क्षेत्र घटकर 20% से भी कम रह गया है। वनों की इस कमी की पूर्ति हेतु 'सामाजिक वृक्षारोपण' कार्यक्रम व्यापक स्तर पर चलाने की आवश्यकता है। जिसके अंतर्गत सार्वजनिक भूमि पर विविध प्रकार के वृक्ष लगाकर वृक्षों को संरक्षित करने के नए-नए तरीकों को ईजाद किया जा सकता है। जिन क्षेत्रों में वनों का विशेष रूप से अभाव हो गया हो, वहाँ पुनः नए सिरे से वृक्षारोपण किया जाए।



देश में वन-क्षेत्र के विस्तार को दृष्टि में रखते हुए विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं में वन-विस्तार को स्थान दिया जाता है। 'सामाजिक वानिकी' संपूर्ण देश में वृक्षारोपण का व्यापक कार्यक्रम है।

इस कार्यक्रम के अंतर्गत कृषकों के खेतों की मेड़ों तथा निकट की खाली भूमि में वृक्ष लगाने के लिए सरकार द्वारा पौधे उपलब्ध कराए जाते हैं। इसके अतिरिक्त 'एक बच्चा-एक पेड़' कार्यक्रम के अंतर्गत बच्चों को फलदार वृक्ष लगाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। ऐसा इसलिए भी माना जाता है क्योंकि सनातन संस्कृति में वृक्षों को देवता माना गया है तथा वृक्षों को काटना एक अपराध। अतः इस अपराध को रोकने की भावना को जन समूह में रोपित करना जरूरी है।

सामाजिक वानिकी कार्यक्रम की सफलता को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से प्रत्येक विकास खंड में प्रायः दो हेक्टेयर भूमि में पौधशाला की व्यवस्था की गई है। इन पौधशालाओं के लिए वन विभाग द्वारा विविध प्रकार की पौध तैयार की जाती हैं। इस कार्यक्रम से अधिकाधिक क्षेत्रों को लाभान्वित करने के लिए गाँवों और नगरों के निवासियों के परामर्श से पौधों के रोपण, क्षेत्रों का चयन एवं निर्धारण किया जाता है। इन रोपण क्षेत्रों में खेतों की मेड़ों की भूमि को भी सम्मिलित किया गया है।

वृक्ष हमारे जीवन को सुखी और सुविधापूर्ण बनाने में अत्यधिक सहायक हैं। ये आँधी-तूफ़ान की तेज़ गति को नियंत्रित करते हैं, भूमि में आर्द्रता बनाए रखते हैं तथा भूमि को अपनी जड़ों से जकड़कर चट्टानों और मिट्टी को खिसकने से रोकते हैं। इनकी कमी होने पर वर्षा कहीं अधिक और कहीं कम होने लगी है और वर्तमान समय में भू-स्खलन, भूकंप, सूखा आदि आपदाएँ हमारे जीवन को न सिर्फ़ प्रभावित कर रही हैं, बल्कि मानव जाति के विनाश का कारण भी बनती जा रही हैं।

शब्दार्थ

घटक	= तत्व
आर्द्रता	= नमी
संपदा	= संपत्ति
संवर्धन	= बढ़ावा

धरोहर	= अमानत
हरीतिमा	= हरियाली
निषेध	= मनाही
क्षीणकाय	= अत्यंत दुर्बल



उच्चारण करें

दृष्टिकोण
नियंत्रित

जलवृष्टि
अंधाधुंध

स्रोत
सामाजिक

विभूति
कार्यक्रम

ध्रुवीय
सुनिश्चित



शिक्षण संकेत-

शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को पाठ के माध्यम से वन एवं पर्यावरण का महत्व समझाते हुए वृक्षारोपण के लिए प्रेरित करें।



अभ्यास कार्य



जरा बोलिए

Speaking Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर बताइए।

- (क) वन संपदा किसे कहते हैं?
- (ख) भूमि की उर्वरा शक्ति किसके द्वारा बढ़ती है?
- (ग) पर्यावरण का आधार किसे माना गया है?
- (घ) वन हमारे किस-किस काम आते हैं?



जरा लिखिए

Writing Skills

2. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

- (क) वन पर्यावरण को किस प्रकार संतुलित रखते हैं?
.....
- (ख) वृक्षों का संरक्षण और उनका संवर्धन किस कार्य हेतु आवश्यक है?
.....
- (ग) वन संपदा के क्या लाभ हैं?
.....
- (घ) वनों से अधिकतम लाभ कैसे प्राप्त किया जा सकता है?
.....

3. दिए गए वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

अमूल्य हरा सोना पानी कार्बनडाइऑक्साइड ऑक्सीजन

- (क) वृक्षों को कहा गया है।
- (ख) वृक्ष मिट्टी का कटाव और के तेज बहाव को रोकने में सहायक हैं।
- (ग) वृक्ष हमसे लेकर प्रदान करते हैं।
- (घ) वन प्रकृति की संपदा हैं।



4. सही मिलान कीजिए।

- | | |
|------------------|------------|
| (क) उर्वरा शक्ति | (i) ईंधन |
| (ख) हरा सोना | (ii) गैस |
| (ग) ऑक्सीजन | (iii) भूमि |
| (घ) लकड़ी | (iv) वृक्ष |

5. उचित विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए।

(क) पर्यावरण का संतुलन घटक है।

☐ जल

☐ वृक्ष

☐ धरा

☐ वायु

(ख) वृक्ष सहायक हैं—

☐ भूमि की पकड़ बनाए रखने में

☐ उर्वरा शक्ति को बढ़ाने में

☐ आपदाओं को रोकने में

☐ ये सभी

(ग) ध्रुवीय क्षेत्रों की बर्फ पिघल रही है—

☐ पर्यावरण का तापमान बिगड़ने से

☐ सूरज की किरणों के कारण

☐ गर्म क्षेत्र होने के कारण

☐ पेड़ लगाने के कारण

6. दिए गए शब्दों से वाक्य बनाइए।

- (क) संरक्षण -
- (ख) पर्यावरण -
- (ग) सुरक्षित -
- (घ) सहायक -



Critical Thinking

7. 'वृक्ष पर्यावरण का आधार हैं।' कैसे? कक्षा में चर्चा करते हुए लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

8. 'वृक्षों को काटना अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारने के समान है।' इस कथन को अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

9. वृक्षों के संवर्धन हेतु हमें क्या प्रयास करने होंगे? कक्षा में संवाद माध्यम से चर्चा करते हुए बताइए।

10. वनों के कटाव हुए बिना औद्योगीकरण संभव नहीं है। इस कथन से आप कितना सहमत हैं और क्यों? यदि नहीं तो क्यों नहीं? लिखिए।



ऊरा भाषा पर गौर कीजिए

Language Skills

11. दिए गए शब्दों के विलोम शब्द लिखिए।

(क) स्वस्थ -

(ख) शुद्ध -

(ग) सुरक्षित –

(घ) मूल्य -



12. दिए गए शब्दों के वचन बदलकर लिखिए।

- | | |
|-------------------|---------------------|
| (क) शाखा - | (ख) पौधा - |
| (ग) वृक्ष - | (घ) क्षेत्र - |

13. दिए गए शब्दों के संधि-विच्छेद कीजिए।

- | | |
|----------------------|----------------------|
| (क) सर्वाधिक - | (ख) अधिकतम - |
| (ग) प्रदूषण - | (घ) पर्यावरण - |

14. दिए गए मुहावरों का वाक्य प्रयोग कीजिए।

- (क) अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मारना -
.....
- (ख) जिस डाल पर बैठना उसी को काटना -
.....
- (ग) टस से मस न होना -
.....
- (घ) आम के आम गुठलियों के दाम -
.....

15. दिए गए वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए।

- (क) कौन आई है? देखो। -
- (ख) जो करेगा वह भरेगा। -
- (ग) कृपया करके तुम भी काम कर लो। -
- (घ) मैं संकल्प लेता हूँ कि वनों की रक्षा करूँगा। -

16. दिए गए वाक्यों में उचित विराम-चिह्न लगाइए।

- (क) उन्होंने रोक कर पूछा पेड़ है कहाँ
- (ख) मेरे मन निराश होने की ज़रूरत नहीं है
- (ग) सब जीव जंतु भाग कर इधर-उधर छिप गए
- (घ) प्रकृति की रक्षा कौन करेगा

17. गलत कारक पहचानते हुए सही कारक लगाकर पुनः वाक्य प्रयोग कीजिए।

- (क) हम ऑक्सीजन वृक्षों के लिए लेते हैं।
- (ख) यात्री पेड़ से छाया को बैठे है।
- (ग) पक्षी अपना घर वृक्षों के लिए बनाते हैं।
- (घ) वन के जीवन सुरक्षित है।





जरा रचनात्मक कार्य कीजिए

18. 'वृक्ष लगाओ, धरा बचाओ' पर अनुच्छेद-लेखन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

19. लकड़ी की कालाबाजारी को रोकने हेतु वन अधिकारी को शिकायत-पत्र लिखिए।

20. दिए गए चित्र का अपने शब्दों में वर्णन कीजिए।



.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....



जीवन कौशल एवं मूल्यपरक प्रश्न

Life Skills & Value Based Question

21. "वन है तो जन है।" आप वनों के संरक्षण हेतु अपनी भूमिका किस प्रकार निभाना चाहेंगे?

